R.N.I. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2021-23

मूल्य-7 रुपये, वर्ष-23, अङ्क-9 सितम्बर 2023

मङ्गलायतन

तीर्थधाम चिदायतन

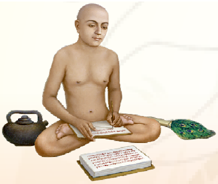

|| श्री कुंदकुंद आचार्य देव ||

|| पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी ||

ऐतिहासिक अतिशयकारी पौराणिक तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर की पुण्य धरा पर
श्री शान्तिनाथ-अकम्पन-कहान- दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हस्तिनापुर द्वारा तीर्थधाम चिदायतन का

वेदी शिलान्यास चिदोत्सव

बुधवार, 15 से गुरूवार, 16 नवम्बर 2023

सम्पर्क सूत्रः तीर्थधाम चिदायतन, दूसरी नसियां से आगे, हस्तिनापुर, मेरठ - 250404 (उ.प्र.)
मोबाइलः मंगलार्थी निखिल जैन, मेरठ; +91 93199 07799 | **ईमेलः** info@chidayatan.com | **वेबसाइटः** www.chidayatan.com

आदरणीय सत्‌धर्म प्रेमी साधर्मीजन,

सादर जयजिनेन्द्र !

समस्त जिनधर्मभक्तों को जानकर हर्ष होगा कि परमोपकारी वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु की अनुकम्पा से, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के पुण्य प्रभावनायोग में, अखिल विश्व की आश्चर्यकारी, परमपवित्र तपोभूमि-हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, **तीर्थधाम चिदायतन** का अवतरण हो रहा है।

हस्तिनापुर वह गौरवशाली ऐतिहासिक एवं पौराणिकनगरी है, जहाँ पर तीन-तीन तीर्थंकरों (भगवान शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ एवं अरनाथ) के चार-चार कल्याणक हुए हैं। साथ ही यह पौराणिक स्थल भगवान मल्लिनाथ के समवसरण, भगवान आदिनाथ के प्रथम आहारदान तथा विष्णुकुमार के द्वारा अकम्पनाचार्य आदि सात सौ मुनिराज पर हुए उपसर्ग निवारण का साक्षी रहा है। यह नगरी, जैन महाभारत के महानायक पाण्डवों एवं कौरवों की प्रसिद्ध राजधानी रही है। प्रतिवर्ष धर्मनगरी हस्तिनापुर में विश्व के अलग-अलग कोनों से लाखों की संख्या में दर्शनार्थी पधारते हैं।

इस संकुल के सम्बन्ध में देश के ख्यातिप्राप्त विद्वानों, श्रेष्ठियों एवं साधर्मियों ने अपनी हार्दिक अनुमोदना प्रदान कर हमारा उत्साहवर्धन किया है।

इस महान धार्मिक प्रकल्प **तीर्थधाम चिदायतन** में भगवान श्री शान्तिनाथ चिदेश जिनालय; श्री गन्धकुटी चौबीसी चिदेश जिनालय; आचार्य कुन्दकुन्द स्वाध्यायमन्दिर; श्री निहालचन्द सोगानी सभागृह; पण्डित कैलाश चन्द जैन सभागृह का शिलान्यास कार्यक्रम **कार्तिक शुक्ला द्वितीया, बुधवार, 15 नवम्बर से कार्तिक शुक्ला तृतीया, गुरुवार, 16 नवम्बर 2023** तक होना निश्चित हुआ है। आप सब इस शिलान्यास चिदोत्सव में सादर आमंत्रित हैं।

आइये, **तीर्थधाम चिदायतन** संकुल निर्माण की अनुमोदना एवं हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र के दर्शन कर अपना जीवन धन्य करें।

मंगल सूचना

आपको जानकर हर्ष होगा...

15 -16 नवम्बर 2023 मे आयोजित तीर्थधाम चिदायतन हस्तिनापुर के वेदी शिलान्यास चिदोत्सव के लिए आवास रजिस्ट्रेशन फॉर्म आ गया है।

https://registration.chidayatan.com/

अतः आप सभी साधर्मियों से निवेदन है कि 15-16 नवम्बर 2023 के चिदोत्सव हेतु registration कर अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होकर धर्म लाभ लेवें।

मङ्गलायतन

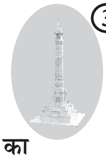

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट (रजि.), अलीगढ़ (उ.प्र.) का

मासिक मुखपत्र

वर्ष-23, अङ्क-10 (वी.नि.सं. 2549; वि.सं. 2079) अक्टूबर 2023

हम बैठे अपनी मौन सौं....

हम बैठे अपनी मौन सौं ॥टेक ॥

दिन दस के मेहमान जगत जन, बोलि बिगारै कौन सौं ॥1 ॥

गये विलाय भरम के बादर, परमारथ-पथ-पौन सौं।
अब अंतर गति भई हमारी, परचे राधा रौन सौं ॥2 ॥

प्रगटी सुधापान की महिमा, मन नहिं लागै बौन सौं।
छिन न सुहाय और रस फीके, रुचि साहिब के लौन सौं ॥3 ॥

रहे अघाय पाय सुख संपति, को निकसै निज भौन सौं।
सहज भाव सद्गुरु की संगति, सुरझै आवागौन सौं ॥4 ॥

साभार : मङ्गल भक्ति सुमन

संस्थापक सम्पादक
स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, अलीगढ़
स्व. श्री पवन जैन, अलीगढ़

सम्पादक
डॉ. जयन्तीलाल जैन, मङ्गलायतन वि०वि०

सह सम्पादक
डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मङ्गलायतन
पण्डित अभिषेक शास्त्री, मङ्गलायतन

सम्पादक मण्डल
बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़
डॉ. राकेश जैन शास्त्री, नागपुर
श्रीमती बीना जैन, देहरादून

सम्पादकीय सलाहकार
पण्डित विमलदादा झाँझरी, उज्जैन
श्री चिरंजीलाल जैन, भावनगर
श्री प्रवीणचन्द्र पी. वोरा, देवलाली
श्री वसन्तभाई एम. दोशी, मुम्बई
श्री श्रेयस् पी. राजा, नैरोबी
श्री विजेन वी. शाह, लन्दन

मार्गदर्शन
डॉ. किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका
पण्डित अशोक लुहाड़िया, मङ्गलायतन

नवीन संस्करण का प्रकाशन

तीर्थधाम मङ्गलायतन : साहित्य प्रकाशन की श्रृंखला में **कविवर पण्डित दौलतरामजी कृत छहढाला** ग्रन्थ।

साथ ही दैनिक पूजन-पाठ के संकलन के साथ **मङ्गल अर्चना** का भी पुनः प्रकाशन का कार्य चल रहा है। जिसमें समस्त पूजनों का संग्रह किया गया है।

पुस्तकें सीमित होने से आप अतिशीघ्र अपनी प्रतियाँ सुरक्षित कर लेवें।

सम्पर्कसूत्र—
पण्डित सुधीर शास्त्री, 9756633800;
पण्डित अभिषेक शास्त्री, 7610009487
Email : info@mangalayatan.com

शुल्क :

एक प्रति	:	07.00 ₹
आजीवन (15 वर्ष)	:	1000.00 ₹

क्या - कहाँ

चरणानुयोग
देशव्रतोद्योतनम् 5
द्रव्यानुयोग
समयसार नाटक 10
स्वानुभूतिदर्शन : 16
प्रथमानुयोग
हस्तिनापुर का अतिशयकारी 18
करणानुयोग
जानिये कर्मों की 148 प्रकृतियाँ 20
प्रथमानुयोग
कवि परिचय 21
बालवाटिका 25
करणानुयोग
श्रुत परम्परा एवं श्रुतज्ञान 26
द्रव्यानुयोग
जिस प्रकार-उसी प्रकार 29
समाचार-दर्शन 30

चरणानुयोग

श्री पद्मनंदी आचार्य कृत श्री पद्मनंदी पंचविंशतिका के
देशव्रतोद्यन नामक अधिकार पर सत्पुरुषश्री कानजीस्वामी का प्रवचन

देशव्रतोद्योतनम्

(प्र० भाद्रपद सुदी 4, रविवार, ता० 21-8-55)

सीमंधर भगवान वर्तमान में विदेहक्षेत्र में हैं, वहाँ भरतक्षेत्र के धर्मात्मा मरकर नहीं जाते। जो मनुष्य शुद्ध चिदानन्द की प्रतीति करता है और बारह व्रत पालता है, वह मरकर मनुष्य न बनकर देवगति में जाता है। मिथ्यादृष्टि मनुष्य मरकर मनुष्य हो सकता है। जिन जीवों को शुद्ध चैतन्य शक्ति का भान है, उन्हें शुभराग के परिणामस्वरूप स्वर्ग के इन्द्रादि के पद मिलते हैं। जिस खेत में सौ मन अनाज हो, वहाँ घास भी तद्नुरूप होती ही है; उसी प्रकार धर्मात्मा को आनन्दकन्द चैतन्य की दृष्टि है, वह जबतक पूर्णता को न पहुंच जाये, तब तक उसे शुभराग के फलस्वरूप देव पद की प्राप्ति होती है। आजकल यह कहा जाता है कि 'यह भव मीठा तो परभव किसने दीठा' यह ठीक मान्यता नहीं है। धर्मात्मा शुभराग के फलस्वरूप प्राप्त देवगति में बहुत काल तक रहता है; आयु समाप्त होने पर पुनः मनुष्य गति मिलती है। उसे मनुष्य भव में वैराग्य होता है 'अहो! मेरा कार्य अपूर्ण रह गया, इसलिये मैं देवगति में गया था।' इसप्रकार वह तीव्र वैराग्य की भावना करके समस्त परिग्रह छोड़कर निर्ग्रंथ वीतरागी मुनि बनता है और तपश्चरण करता हुआ अंत में मुक्ति प्राप्त करता है। चैतन्य शक्ति के भानवाला जीव, पूर्णदशा प्राप्त नहीं होने के कारण, शुभराग के परिणाम -स्वरूप स्वर्ग में जाता है और वहाँ से चयकर मनुष्य होकर मुक्ति जाये, इसप्रकार सम्यग्दृष्टि जीव तीन भव में मुक्त हो सकता है।

आत्मा की पूर्ण शक्ति प्रकट कर पूर्ण आनन्द का अनुभव करना मुक्ति है, इसे धर्मात्मा गृहस्थ तीसरे भव में पा सकता है, इसी कारण अणुव्रतादि

बारह व्रत मुक्ति के कारण हैं; इसलिये भव्य जीवों को छः आवश्यकपूर्वक अणुव्रतादि का पालन करना चाहिये। यह जीव खान, पान और अर्जन के कार्य दिन-रात करता रहता है, धर्मात्मा इनसे बचने के लिए दया, दान, पूजा आदि किये बिना नहीं रहता। शुद्ध दृष्टिवाले धर्मात्मा इसी क्रम से मुक्ति प्राप्त करेंगे।

गाथा-25

पुन्सोऽर्थेषु चतुर्षु निश्चलतरो मोक्षः परं सत्सुखः।
शेषास्तद्विपरीतधर्मकलिता हेया मुमुक्षोरतः॥
तस्मात्तत्पदसाधनत्वधरणो धर्मोऽपि नो सम्मतो।
यो भोगादिनिमित्तमेव स पुनः पापं बुधैर्मन्यते॥25॥

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों में मोक्ष उत्तम पुरुषार्थ है।

पुरुषार्थ चार प्रकार के हैं:—

1. धर्म पुरुषार्थ—राग की मंदता का—दया, दान, सेवा, सच्चे देव-गुरु-शास्त्र की भक्ति का—पुरुषार्थ, यह पुण्य पुरुषार्थ है।

2. अर्थ पुरुषार्थ—कमाने का पुरुषार्थ है, यह पाप पुरुषार्थ है।

3. काम पुरुषार्थ—भोग का पुरुषार्थ है, यह पाप है।

4. मोक्ष—पुण्य-पाप रहित मेरा शुद्ध चैतन्यस्वरूप है, ऐसी श्रद्धा कर पूर्ण दशा प्रकट करने का प्रयत्न करना मोक्ष पुरुषार्थ है।

इन चारों में मोक्ष पुरुषार्थ उत्तम है। इसके अतिरिक्त अन्य पुरुषार्थ विपरीत मार्ग की ओर ले जानेवाले हैं। आत्मा शुद्ध चिदानंद है, ऐसी श्रद्धावाले धर्मात्मा जीव को विषयभोग या कमाने की इच्छा या उद्योग नहीं करने चाहिये। इस ग्रन्थ की अन्तिम गाथा में आचार्य कहते हैं कि "जो मनुष्य मुमुक्षु हैं और मोक्ष की प्राप्ति के अभिलाषी हैं, उनके लिये युवती-स्त्रियों के साहचर्य के निषेधार्थ यह ब्रह्मचर्याष्टक बनाया है किंतु जो मनुष्य भोग-विलास में आसक्त हैं, अगर उन्हें यह अष्टक अच्छा नहीं लगे तो मुझे

मुनि समझकर क्षमा करें।'' अतः भोगविलास में रुचि छोड़ना ही कल्याणकारी है क्योंकि इस मनुष्य भव में भी निम्न दर्जे के भाव करोगे तो आगे नीच गति पाओगे। अर्थ और काम पुरुषार्थ पाप है। धर्म-दया दानादि का भाव-पुण्यकारी पुरुषार्थ है। स्वभाव की दृष्टिपूर्वक सच्चे देव-गुरु-शास्त्र की भक्ति पुण्य की निमित्त है किंतु अगर कोई इस मान्यता से भक्ति करे कि इससे मुझे इष्ट सामग्री मिलेगी, राजा होऊंगा, धनी होऊंगा तो यह पुण्य निमित्त न रहकर पाप का निमित्त हो जायेगा। इसलिये इस मान्यता के साथ ये कार्य नहीं करने चाहिये। आत्मा की दृष्टिपूर्वक होनेवाले शुभभाव, मोक्ष के निमित्त हैं, उनका अभाव होने पर मुक्ति होगी। पूर्णानन्द आत्मा का विश्वास होने पर भी अपनी निर्बलता से स्थिर नहीं रह सकता, इसलिये धर्मी को देव-गुरु-शास्त्र के प्रति शुभराग आता है जो कि मोक्ष में निमित्त है।

भावार्थ—धर्म पुरुषार्थ पुण्यकारी है और अर्थ तथा काम पुरुषार्थ पापरूप है। इसलिये मोक्ष पुरुषार्थ पुण्य-पापरहित अंतरंग की स्वभाव दृष्टि-करना सच्चा धर्म है। ऐसी श्रद्धा होने पर देव-गुरु-शास्त्र की भक्ति आदि को व्यवहार धर्म कहा है। जिस पुरुषार्थ से विकारी दशा नष्ट कर अविकारी दशा-मोक्ष दशा प्रकट हो, ऐसा मोक्ष पुरुषार्थ उत्तम है। धन तो अपने कारण से आता और जाता है, बड़े-बड़े राजा-महाराजा, नवाब-बादशाहों के राज्य समाप्त हो गये; इसलिये पुण्य और पाप दोनों को छोड़कर अपनी पूर्णदशा प्रगट हो, ऐसा मोक्ष पुरुषार्थ ही धर्मी जीवों को करना चाहिये और कमाने तथा भोग-विलास का पुरुषार्थ छोड़ना चाहिये।

फल की इच्छा से पुण्य पुरुषार्थ नहीं करना चाहिये।

श्रावक के पाँच अणुव्रत-अहिंसा, सत्य, अचौर्य, स्वदारसंतोष व्रत, अपरिग्रह होते हैं। भव्य जीवों को तो मोक्ष प्राप्ति का उद्योग ही करना चाहिये। आत्मा के आनन्द, वीतरागी स्वभाव के बल से पूर्णदशा प्रगट करना ही मुक्ति है। सिद्ध शिला पर रहना मुक्ति नहीं है; वहाँ तो निगोद काय के जीव भी रहते हैं। आत्मस्वरूप की रुचि छोड़ पर में अटकना और तत्परिणाम स्वरूप

विकार होना ही संसार है। आत्मस्वभाव विकाररहित है, ऐसी श्रद्धाकर और उसमें लीन होकर पूर्णस्वरूप प्रकट करना मोक्ष पुरुषार्थ है।

गाथा-26

भव्यानामणुमिर्व्रतैरनणुभिः साव्योऽत्र मोक्षः परं।
नान्यत्किंचिदिहैव निश्चयनयाज्जीवः सुखी जायते॥
सर्वं तु व्रतजातमीदृशधियाः साफल्यमेत्यन्यथा।
संसाराश्रयकारणं भवति यत्तद् दुःखमेव स्फुटम्॥26॥

भव्य जीवों को मोक्ष के निमित्त अणुव्रत और महाव्रत ग्रहण करने चाहिये।

मनुष्य भव मिला है, इसलिये योग्य जीवों को अणुव्रत अवश्य पालने चाहिये। मुनि महाव्रत—अहिंसा, सत्य, अचौर्य ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पालन करते हैं, जिसके पुण्य से उन्हें स्वर्ग मिलता है किन्तु उन्हें स्वर्ग की कामना नहीं है। शुभराग, मोक्ष के निमित्त हैं। किन्तु पुण्य साध्य नहीं है। अज्ञानी पुण्य की इच्छा करता है।

ज्ञानी के जबतक पूर्ण स्वरूप की प्राप्ति न हो जाये, तब तक शुभराग आते हैं किंतु उनमें तथा उनके फल में सुख नहीं है। आनन्दकन्द आत्मा के अवलम्बन से जो पूर्ण दशा हो, वह मोक्ष है। श्रावक के 12 व्रत तथा मुनि के 28 मूलगुण उनकी मुक्ति के निमित्त हैं; यदि इनसे अन्त में मुक्ति हो जाये तो ये निमित्त कहलाते हैं किंतु जिसकी दृष्टि शुभराग के प्रति है, उसके लिये ये व्रतादि संसार के कारण हैं; उसके लिए पुण्य दुःखरूप हैं क्योंकि उसका पुण्य आत्मसुख का निमित्त नहीं है। मुनियों को भी मोक्षदशा के निमित्त पाँच महाव्रतादि अपनाने का भाव आता है। उसी प्रकार श्रावक को अणुव्रतों के धारण का राग होता है। आत्मदृष्टि से शुभराग अनर्थकारक हैं किंतु चरणानुयोग की पद्धति में कहा जाता है कि व्रत धारण करो। द्रव्यानुयोग में कहा जाता है कि धर्मात्मा की दृष्टि राग करने की नहीं होती। निश्चय के ग्रन्थों में कहा गया है कि व्रत अनर्थ के कारण हैं किन्तु साधक को अपनी

भूमिका अनुसार शुभराग व्रतादिक अपनाने का राग होता ही है। मुक्तस्वभाव का आश्रय करने से शांति मिलती है किंतु अपूर्ण अवस्था में श्रावक को अणुव्रत का राग आए बिना नहीं रहता; इसलिये उसे अणुव्रत धारण करना चाहिये—ऐसा चरणानुयोग में कहा गया है।

'देशव्रतोद्योतन' नामक अधिकार की समाप्ति करते हुये आचार्य इस अधिकार का फल बताते हैं:—

गाथा-27

यत् कल्याणपरम्परार्पणपरं भव्यात्मनां संसृतौ।
पर्यन्ते यदनन्त सौख्य सदनं मोक्षं ददाति भुवम्॥
तज्जीयादति दुर्लभं सुनरता मुख्यैर्गुणैः प्रापितम्।
श्रीमत्पंकजनन्दिभिर्विरचितं देशव्रतोद्योतनम्॥27॥

आत्मभानपूर्वक देशव्रत स्वर्ग तथा परम्परा से मोक्ष का कारण है।

इस गाथा के साथ यह अधिकार पूरा होता है। इस अधिकार में छः आवश्यकसहित देशव्रत का वर्णन किया। धर्मात्मा को आत्मा के भानपूर्वक इन्द्रपद मिलता है, फिर मनुष्य होकर मुक्ति प्राप्त करता है। देव भी चक्रवर्ती की सेवा करते हैं। पुण्य के प्रताप से धर्मी जीव चक्रवर्ती, बलदेव आदि बनते हैं। इस अधिकार का भाव अनंत काल तक रहे। वह मोक्षदशा का कारण है, इसलिये मनुष्य भव में देशव्रतादि का भाव करे तो उसकी सफलता है। पद्मनंदि आचार्य ने इस ग्रन्थ की रचना की है। वे दिगम्बर मुनि थे, जंगल में रहते थे। ऐसे मुनि द्वारा प्रणीत यह शास्त्र और उसमें वर्णित श्रावक धर्म चिरकाल रहे।

भावार्थ—यह देशव्रतोद्योतन इन्द्र, अहमिन्द्र चक्रवर्ती आदि महान पदों की प्राप्ति का कारण है तथा इससे उत्तम मनुष्य, कुल आदि की प्राप्ति होती है। आत्मानन्द के भानपूर्वक पूर्ण आनन्द प्रकट हुआ है, ऐसे परमात्मा के प्रति भक्ति और अणुव्रत का भाव श्रावक को आए बिना नहीं रहता।

इसप्रकार पद्मनंदि पंचविंशतिका का 'देशव्रतोद्योतन' नामक अधिकार समाप्त हुआ।

द्रव्यानुयोग

श्री समयसार नाटक पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के धारावाही प्रवचन

कर्त्ता कर्म क्रिया द्वार प्रवचन

'एक करतूति दोइ दर्व कबहूँ न करै'– जड़ का अथवा चेतन का एक कर्त्तव्य दो द्रव्य मिलकर कभी नहीं कर सकते। तो प्रश्न होता है कि एक विशाल (वजनी) वस्तु एक व्यक्ति से नहीं उठती हो, परन्तु दस मनुष्य मिलकर उस वस्तु को उठावें तो उठती है तो क्या दस ने मिलकर एक कार्य किया नहीं कहलायेगा? नहीं, क्योंकि दसों में से प्रत्येक से अकेले से तो यह कार्य हो ही नहीं सका है और दस व्यक्ति शामिल हुए तो कोई एक तो हो नहीं गये हैं; इसलिए वह कार्य किसी से नहीं हुआ है। तीन काल में एक कर्त्तव्य (कार्य) के कर्त्ता दो द्रव्य हों –ऐसा कभी हो ही नहीं सकता।

बालक को बड़ा करने का कार्य तो माता–पिता ने किया या नहीं? नहीं, माता–पिता ने राग का कार्य किया है; परन्तु माता–पिता बालक को बड़ा करने का कार्य नहीं कर सकते। प्रत्येक द्रव्य स्वतंत्र है। कोई किसी का कार्य नहीं कर सकता। प्रत्येक जीव अपने परिणाम को करता है। कोई किसी का पिता अथवा पुत्र नहीं है। किसी के परिणाम से किसी को लाभ या नुकसान नहीं होता। प्रत्येक पदार्थ अपना अस्तित्त्व रखता है और अपना कार्य करता है। किसी एक का अस्तित्त्व नष्ट होवे तो उसके कार्य को कोई दूसरा करे; परन्तु किसी के अस्तित्त्व का नाश तीन काल में कभी नहीं होता।

यह अँगुली हिलती है, वह अँगुली के परमाणुओं का कार्य है; यह जीव की इच्छा का कार्य नहीं है। जीव इच्छा का कार्य करता है; परन्तु अँगुली हिलाने का कार्य जीव नहीं कर सकता।

यह जगत से उलटी ही बात है। जगत उलटा है, उसमें करना क्या? कि करने योग्य है, वह करना। आत्मा का ज्ञान–दर्शन और आनन्द करने योग्य है, **'दोई करतूति एक द्रव्य न करतु है'**– एक द्रव्य दो द्रव्यों का कार्य कभी

नहीं करता। द्रव्य अपना कार्य करे और पर का कार्य भी करे –ऐसा तीन काल में नहीं होता है।

श्रोता :– आत्मा विकार करता है और कर्म भी बाँधता है न ?

पूज्य गुरुदेवश्री :– आत्मा विकार के कार्य को करता है; परन्तु कर्म बाँधने का कार्य आत्मा का नहीं है। कर्म स्वयं कर्म के परमाणुओं से बँधते हैं और जब आत्मा अपने आश्रय से संवर–निर्जरारूप धर्म का कार्य करता है, तब कर्म स्वयं नष्ट हो जाते हैं –कर्म अकर्मरूप हो जाते हैं; उन्हें जीव नहीं करता है। कर्म का अभाव हुआ, इसलिए धर्म हुआ –ऐसा भी नहीं हैं। कर्म का कार्य कर्म में होता है और आत्मा का कार्य आत्मा में होता है। दो कार्यों को एक द्रव्य नहीं करता अथवा एक कार्य को दो द्रव्य मिलकर नहीं करते।

अज्ञानी राग का कर्त्ता होकर खाने की इच्छा करता है; परन्तु खाने की क्रिया को अज्ञानी नहीं कर सकता। कारीगर मकान नहीं बना सकता। सुनार गहने नहीं बना सकता। इसप्रकार सर्वत्र समझ लेना।

श्रोता :– आपने तो यह नया पंथ निकाला है ?

पूज्य गुरुदेवश्री :– यह नया पंथ नहीं है। यह तो अनादि का मार्ग है। यह तो वीतराग सर्वज्ञदेव द्वारा कथित सनातन मार्ग है। इसकी न्याय से तुलना करके देखो न! एक तत्त्व दूसरे तत्त्व का करे तो दो तत्त्व भिन्न नहीं रह सकते; परन्तु कोई तत्त्व अपनी सत्ता को छोड़कर अन्य की सत्ता में जाता ही नहीं है। यह बोलने की क्रिया होती है उसको आत्मा भी करता है और जड़ भी करता है– ऐसा नहीं होता। बोलने की क्रिया भाषा–वर्गणा करती है, जीव नहीं करता।

कोई ऐसा कहता है कि अपने को जीवों को मारना या बचाना नहीं –ऐसा कुछ नहीं करना; परन्तु जीवों को उपदेश देना कि 'किसी प्राणी को दु:ख मत दो' –ऐसा उपदेश देने से अपने को धर्म का लाभ होगा। वह ऐसा नहीं विचारता कि बोलने की क्रिया तो जड़ की है और उपदेश का विकल्प

उत्पन्न हुआ, वह राग है। राग से धर्म की क्रिया कैसे होगी ?जो राग से धर्म मानता है, वह तो मूढ़ है।

भाई ! वीतराग के मार्ग को जगत के साथ मत मिलाना।

ज्ञानानन्दस्वरूप भगवान पूर्णानन्द का नाथ है। उस तरफ दृष्टि झुका और वहीं ठहर जा तो तेरा कार्य सफल हो जायेगा। अन्य को उपदेश देकर धर्म प्राप्त कराने जायेगा उसमें कुछ भी सफलता नहीं मिलेगी। आज तक तो किसी ने किसी को तिराया नहीं है। तो भगवान को तरण-तारण कहा है, उसका क्या अर्थ है ?यह तो निमित्त से कथन है। जो कोई तिरे हैं; वे अपनी योग्यता से तिरे हैं; उसमें भगवान को निमित्त कहा जाता है। यदि भगवान ही तिरा देते हों तब तो सबको भगवान सिद्ध बना दें..तब तो संसार रहे ही नहीं, परन्तु संसार तो अनादि का है, इसका कभी नाश नहीं होता।

जीव और पुद्गल एक क्षेत्र में रहते हैं; परन्तु कोई अपने-अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता अपनी सत्ता को कोई द्रव्य नहीं छोड़ता। अच्छा-अच्छा भोजन करने से शरीर अच्छा रहता है -ऐसा नहीं होता है। आत्मा खाने की क्रिया करता ही नहीं। अधिक से अधिक अज्ञानदशा में आत्मा राग करता है; परन्तु वह खाने की क्रिया नहीं कर सकता।

भाई ! यह तो सर्वज्ञ परमेश्वर वीतराग का मार्ग है। जिन्होंने तीन काल-तीन लोक में स्थित पदार्थों की भिन्न-भिन्न सत्ता को जाना है। उस प्रत्येक पदार्थ के द्रव्य-गुण-पर्याय का होनापना उसकी अपनी सत्ता से है। पर के कारण उसके द्रव्य-गुण-पर्याय का अस्तित्व नहीं है। इसलिए भाई ! मेरे से ये अन्य के कार्य होते हैं -ऐसा अभिमान करना रहने देना। साधु नाम धराकर भी बहुत से ऐसे मिथ्यामान का सेवन करते हैं कि हमारे पास पैसा नहीं है; परन्तु हम उपदेश देकर लोगों के पास से दान में पैसा खींच लेते हैं। लोग पाँच-पाँच, दस-दस लाख दान में दे देते हैं। बहिनों को उपदेश देते हैं कि क्या तुमको पैसा देने का अधिकार नहीं है ! अरे ! घर में काम करनेवाली रखते हो, उसे भी कितना वेतन देते हो तो तुम तो इस घर में पचास-पचास

वर्षों से काम करती हो, तो तुम्हारे कितने पैसे इकट्ठे हुए। बहिनों के पास पैसे नहीं हों तो गहने दान में दे दो –इसप्रकार अलग-अलग उपदेश देकर हम दान कराते हैं– ऐसा अभिमान करता है। उसको पता नहीं है कि वाणी का कार्य मेरा नहीं है और पैसे इकट्ठे करने का कार्य भी मेरा नहीं है। व्यर्थ ही मिथ्यात्व का सेवन करता है।

यहाँ तो कहते हैं कि आत्मा पर का कार्य तो करता ही नहीं; परन्तु राग का कर्त्ता होता है, वह भी मूढ़ है। आत्मा को विकारी माननेवाला अज्ञानी अविकारी स्वभाव का अनादर करनेवाला है।

यह तो जिसको आत्महित करना हो, उसके लिए बात है। वस्तु का स्वरूप ही ऐसा है। भगवान ने कहा इसलिए है –ऐसा नहीं। भगवान ने तो जैसा है, वैसा देखा है– जाना है और वैसा ही कहा है।

बहुत से सेठ ऐसा कहते हैं कि हम कोई व्यापार के लिए यह सब नहीं करते। हम तो आठ-दस मनुष्यों को रोजगार देने के लिए ये कारखाने इत्यादि चलाते हैं। उन्हें पता नहीं है कि कारखाना तो क्या, परन्तु विकल्प भी तेरे में उत्पन्न हो, उसका कर्त्ता होने जायेगा तो निर्विकल्प तत्त्व भूल जायेगा; तो इसमें तेरा क्या हित होगा ? तेरे विकल्प से दूसरों को पैसा मिलने अथवा रोजगार मिलने का काम हो यह बात हराम है, अत्यन्त झूठ है। भाई ! तुझको सत् के स्वरूप का पता नहीं है।

तो प्रौषध और प्रतिक्रमण करने से तो मुझको धर्म होगा न ? ऐसा मानना भी मिथ्या है। जितनी राग की मंदता होगी, उतना पुण्य बँधेगा; परन्तु धर्म नहीं होगा। साधु लोग जाते हैं, तब लोगों से अमुक त्याग की प्रतिज्ञा कराते हैं; परन्तु सामनेवाले जीव के राग की मंदता से तुझे लाभ होना है ? एक राग की क्रिया के दो कर्त्ता नहीं होते हैं।

ऐसा मार्ग वीतराग का, कहा श्री भगवान।
समवसरण के मध्य में, श्री सीमंधर भगवान॥

श्री सीमंधर त्रिलोकनाथ परमात्मा ने समवसरण में यह फरमाया है कि एक द्रव्य दो द्रव्यों के कार्य को नहीं करता और दो द्रव्य मिलकर एक के

कार्य को नहीं करते- ऐसा है बापू! यह बात तुझे रुचे या नहीं रुचे, उसके लिए तू स्वतंत्र है।

कर्म जीव को चार गतियों में परिभ्रमण नहीं कराता। जीव स्वयं अपनी भूल से चार गतियों में भ्रमण करता है और स्वयं ही भूल मिटाकर भगवान हो सकता है। ज्ञानानन्दमय भगवान आत्मा अज्ञानपने राग को आचरता है और ज्ञानपने आनन्द को आचरता है- ऐसा ही इसका स्वभाव है। 'चिदानन्द चेतन सुभाउ आचरतु है' -ऐसा इसका अनादि-अनन्त स्वभाव है।

वीतराग कथित यह एक ही मार्ग सत्य है, अन्य कोई मार्ग सत्य नहीं है।

भाई! यह सूक्ष्म बात है।

अब इस श्लोक (पद) में मिथ्यात्व और सम्यक्त्व का स्वरूप कहते हैं:-

मिथ्यात्व और सम्यक्त्व का स्वरूप

महा धीठ दुखकौ वसीठ परदर्वरूप,
अंधकूप काहूपै निवार्‌यौ नहि गयौ है।
ऐसौ मिथ्याभाव लग्यौ जीवकौं अनादिहीकौ,
याहि अहंबुद्धि लिए नानाभांति भयौ है॥
काहू समै काहूकौ मिथ्यात अंधकार भेदि,
ममता उछेदि सुद्ध भाव परिनयौ है।
तिनही विवेक धारि बंधकौ विलास डारि,
आतम सकतिसौं जगत जीत लयौ है॥11॥

अर्थः- जो अत्यन्त कठोर है, दुःखों का दूत है, परद्रव्य जनित है, अंधकूप के समान है, किसी से हटाया नहीं जा सकता ऐसा मिथ्यात्वभाव जीव को अनादि काल से लग रहा है। और इसी कारण जीव, परद्रव्य में अहंबुद्धि करके अनेक अवस्थाएँ धारण करता है। यदि कोई जीव किसी समय मिथ्यात्व का अहंकार नष्ट करे और परद्रव्य से ममत्वभाव हटाकर शुद्धभावरूप परिणाम करे तो वह भेदविज्ञान धारण करके बंध के कारणों

को हटाकर, अपनी आत्मशक्ति से संसार को जीत लेता है अर्थात् मुक्त हो जाता है ॥11 ॥

काव्य – 11 पर प्रवचन

यह श्री नाटक समयसार का कर्त्ता–कर्म–क्रिया का अधिकार चल रहा है। अब इसमें दसवें श्लोक का ग्यारहवाँ पद चलता है।

आत्मा कर्त्ता और 'कर्म' उसका कार्य –ऐसा कभी नहीं हो सकता; परन्तु अज्ञानी को आत्मा 'ज्ञायक' है ऐसा भान नहीं होने से वह अपने को पर के कार्यों का कर्त्ता मानता है। मैं शरीर की क्रिया करता हूँ, मैं पर की सहायता करता हूँ, मुझे पर से लाभ–नुकसान होता है, मैं मनुष्य हूँ अथवा मैं देव, नारकी या तिर्यंच हूँ। इसप्रकार अनेकप्रकार से पर में अहंकार और ममकार करके अज्ञानी मिथ्यात्व भाव का सेवन करता है।

मिथ्यात्वभाव महाधीठ है, अत्यन्त कठोर है, दु:खों का दूत है, परद्रव्यजनित है, अंधकूप के समान है तथा किसी से हटाया नहीं जा सकता।

भगवान आत्मा तो ज्ञानस्वरूप है। जानन–देखन स्वभाव वाला है। उसे भूलकर शरीरादि संयोगी वस्तु को अपनी मानता है। मैं पर की मदद करता हूँ और परद्रव्य मुझे मदद करते हैं– ऐसी मान्यतावाला मिथ्यात्वभाव महाधीठ है। मैं पंच महाव्रतादि अट्ठाईस मूलगुणों का पालन करता हूँ– इसप्रकार राग और शरीर की क्रिया को अपनी क्रिया माननेवाला मिथ्यात्वभाव महाधीठ है।

आत्मा की एक समय की पर्याय पर दृष्टि पड़ी है, वह भी मिथ्यात्व भाव है। भगवान आत्मा तो सिद्धस्वरूपी चैतन्यघन विज्ञानघन अरूपी है। ऐसे अपने स्वरूप को भूलकर, मैं परद्रव्य के कार्य करता हूँ –विभाव के कार्य मेरे हैं और विभाव को जाननेवाली वर्तमान ज्ञान की पर्याय जितना ही मैं हूँ, सम्पूर्ण आत्मा हूँ– ऐसा मिथ्यादृष्टि का मिथ्या अहंकार महा दु:खरूप है।

क्रमशः

स्वानुभूतिदर्शन : बहिनश्री की तत्त्वचर्चा

प्रश्न :- राग में सहज एकाकार हो जाते हैं, उससे पृथक् होने का अभ्यास कैसे किया जाये, वह समझाने की कृपा करें।

समाधान :- राग में एकत्वबुद्धि है उसी क्षण उसे विचार आना चाहिए कि जो राग है, वह मैं नहीं हूँ, मैं तो ज्ञाता हूँ। राग कहीं मेरा स्वरूप नहीं है। जो राग-विभावभाव हैं, वे आकुलतारूप हैं, उनमें कहीं शान्ति नहीं दिखती, आकुलता से पृथक् रहनेवाला जो शान्तस्वरूप है, उसमें राग की आकुलता नहीं है।

उसी प्रकार खाते-पीते या किसी भी कार्य के करते समय उसे विचार आना चाहिए कि यह शरीर भिन्न, यह खाना भिन्न, यह आहार भिन्न और यह पेट भिन्न है। उस समय यह वस्तु अच्छी है, यह बुरी है ऐसा जो राग आता है, वह सब कल्पना है; वह तो पुद्गल की पर्यायें हैं और उनमें जो राग आता है, उस राग से भी भिन्न मैं ज्ञाता हूँ।

यह जो भोजन जाता है, वह पेट में जाता है, मेरे ज्ञायक में नहीं जाता, मैं ज्ञाता उनसे भिन्न हूँ—ऐसा विचार बारम्बार करें। उसे अन्तर में यह बात बैठना चाहिये कि राग आये, वह मेरा स्वरूप नहीं है। अपनी मन्दता के कारण राग आता है, तथापि विभाव की परिणति से मैं भिन्न हूँ। मैं सिद्ध भगवान सदृश आत्मा हूँ; वास्तव में विभाव, वस्तु का मूलस्वरूप नहीं होता, और जो स्वरूप हो वह विभावरूप नहीं होता; विभाव तो दुःखदायक है और मैं तो निर्मलस्वभाव हूँ, मैं तो भिन्न हूँ—ऐसे अनेक प्रकार से विचार करें।

राग आये उसी क्षण मैं भिन्न हूँ, वीतराग स्वभाव हूँ; राग की आकुलता वह मेरा स्वरूप नहीं है। मैं शान्तस्वरूप हूँ, वीतराग स्वरूप हूँ, मैं तो जाननेवाला ज्ञायक हूँ, यह राग की विकृति वह मेरा स्वरूप ही नहीं है।

मुमुक्षु : राग से भेद करने में कठिनाई तो दिखती है। राग के समय राग से

निराला ज्ञाता सो मैं हूँ—यह कठिन तो लगता है फिर भी आपके समझाने पर इतना ख्याल आता है कि सविकल्पदशा में अभी भी बहुत करना रह जाता है।

बहिनश्री : जिसे सहज हो उसे विचार नहीं करना पड़ता; यह तो जो अभ्यास कर रहा है, उसकी बात है। किस प्रकार करना वह वास्तव में तो अपने को विचारना है। गुरुदेव ने बहुत समझाया है; फिर भी इस प्रकार अभ्यास करे तो विकल्पों से छूटने का अवसर आता है।

निर्णय किया हो कि शरीर तो जड़ है, मैं जुदा हूँ; परन्तु शरीर में कोई रोग आये अथवा खाने-पीने की क्रिया होती हो उस समय मैं जुदा हूँ और यह जड़ है वैसा भास कहाँ होता है ? उसकी परिणति तो एकत्व कर रही है। राग की परिणति हो उससे मैं जुदा हूँ ऐसा प्रयत्न में आना चाहिए, तब उसे विकल्प छूटने का अवसर आये। वह आकुलता न करे परन्तु शान्ति रखे कि मैं जुदा सो जुदा ही हूँ। यह विकल्प कब टूटेगा ? कब टूटेगा ? ऐसे विकल्प के पीछे आकुलित न होकर जुदे होने का पुरुषार्थ करना।

मैं जुदा हूँ और जुदा होना ही मुक्ति का मार्ग है। जुदे होने का प्रयास—अभ्यास करना चाहिए। उसके लिये उलझन, आकुलता या जल्दबाजी करने से भी विकल्प नहीं टूटता।

मुमुक्षु : सविकल्पदशा में भी भेदज्ञान का अभ्यास करने से परिणति सहज ही जुदी पड़ जाती है, वह समझ में नहीं आता था; आज आपने बहुत अच्छी स्पष्टता कर दी।

बहिनश्री : अनेक बार कहा जाता है कि भेदज्ञान का अभ्यास कर, परिणति अन्दर से पलट दे। तू अभ्यास कर क्योंकि जीव ने अनन्त काल में अनेक विकल्पात्मक ध्यान किये हैं। अशुभ छूटकर शुभ विकल्प इतने मन्द हो जाते हैं कि उसे ऐसा लगता है कि विकल्प हैं ही नहीं; परन्तु भेदज्ञान के अभ्यास बिना एकदम निर्विकल्प होना कठिन होता है। बाह्य से चाहे जितने ध्यान करे तथापि विकल्प नहीं टूटते। एकत्वबुद्धि हो और ऊपर-ऊपर से

शेष पृष्ठ 24 पर....

प्रथमानुयोग

तीर्थधाम चिदायतन

हस्तिनापुर का अतिशयकारी इतिहास

धार्मिक नगरी हस्तिनापुर का वर्णन उत्तरपुराण से

शंखनाद, भेरीनाद, सिंहनाद और घंटानाद से जिन्हें जिन-जन्म की सूचना दी गई है ऐसे चारों निकायों के देवों ने मिलकर जिनेन्द्र भगवान का जन्मोत्सव बढ़ाया। उस समय दिशाओं के मध्य को प्रकाशित करनेवाली महादेवी इन्द्राणी ने गर्भ-गृह में प्रवेश किया और कुमारसहित पतिव्रता जिनमाता ऐरा को मायामयी निद्रा से वशीभूत कर दिया। उसने पूजनीय जिनमाता को प्रदक्षिणा देकर प्रणाम किया और एक मायामयी बालक उसके सामने रख कर जिन्हें सर्वदेव नमस्कार करते हैं, ऐसे श्रेष्ठ कुमार जिन-बालक को उठा लिया तथा अपनी दोनों कोमल भुजाओं से ले जाकर इन्द्र के हाथों में सौंप दिया। इन्द्र ने उन्हें ऐरावत हाथी के कन्धे पर विराजमान किया और पहले जिस प्रकार भगवान आदिनाथ को सुमेरु पर्वत के मस्तक पर विराजमान कर क्षीर-महासागर के जल से उनका अभिषेक किया था इसी प्रकार इन्हें भी सुमेरु पर्वत के मस्तक पर विराजमान कर क्षीर-महासागर के जल से इनका अभिषेक किया। यद्यपि भगवान स्वयं उत्तमोत्तम आभूषणों में से एक आभूषण थे तथापि इन्द्र ने केवल आचार का पालन करने के लिए ही उन्हें आभूषणों से विभूषित किया था। ये भगवान सबको शान्ति देनेवाले हैं इसलिए 'शान्ति' इस नाम को प्राप्त हों, ऐसा सोचकर इन्द्र ने अभिषेक के बाद उनका शान्तिनाथ नाम रखा। तदनन्तर धर्मेन्द्र सब देवों के साथ बड़े प्रेम से सुमेरु पर्वत से राजमन्दिर आया और माता से सब समाचार कहकर उसने वे त्रिलोकीनाथ माता को सौंप दिये। जिसे आनन्द प्रकट हो रहा है तथा जिसके अनेक भावों और रसों का उदय हुआ है, ऐसे इन्द्र ने नृत्य किया सो ठीक ही है क्योंकि जब हर्ष, मर्यादा का उल्लंघन कर जाता है तो किस रागी मनुष्य को नहीं नचा देता ? यद्यपि भगवान तीन लोक के रक्षक थे तो भी इन्द्र ने उन बालक रूपधारी महात्मा की रक्षा करने के लिए लोकपालों को नियुक्त

किया था। इस प्रकार जन्मकल्याणक का उत्सव पूर्ण कर समस्त देव इन्द्र के साथ अपने-अपने स्थान पर चले गये।

धर्मनाथ तीर्थंकर के बाद पौन पल्य कम तीन सागर बीत जाने तथा पाव पल्य तक धर्म का विच्छेद होने पर जिन्हें मनुष्य और इन्द्र नमस्कार करते हैं ऐसे शान्तिनाथ भगवान उत्पन्न हुए थे। उनकी आयु भी इसी में सम्मिलित थी। उनकी एक लाख वर्ष की आयु थी, चालीस धनुष ऊँचा शरीर था, सुवर्ण के समान कान्ति थी, ध्वजा, तोरण, सूर्य, चन्द्र, शंख और चक्र आदि के चिह्न उनके शरीर में थे। पुण्यकर्म के उदय से भी दीर्घकाल तक अहमिन्द्रपने का अनुभवकर राजा विश्वसेन की दूसरी रानी यशवती के चक्रायुध नाम का पुत्र हुआ। जिस प्रकार समुद्र में महामणि बढ़ता है, मुनि में गुणों का समूह बढ़ता है और प्रकट हुए अभ्युदय में हर्ष बढ़ता है, उसी प्रकार वहाँ बालक शान्तिनाथ बढ़ रहे थे। उनमें अनेक गुण, अवयवों के साथ स्पर्धा करके ही मानो क्रम-क्रम से बढ़ रहे थे और कीर्ति, लक्ष्मी तथा सरस्वती इस प्रकार बढ़ रही थीं मानो सगी बहिन ही हों। जिस प्रकार पूर्णिमा के दिन विकलता-खण्डावस्था से रहित चन्द्रमा का मण्डल सुशोभित हो रहा था। उनके मस्तक पर इकट्ठे हुए भ्रमरों के समान, कोमल पतले, चिकने, काले और घुँघरेवाले शुभ बाल बड़े ही अच्छे जान पड़ते थे।

उनका सिर मेरुपर्वत के शिखर के समान सुशोभित होता था अथवा इस विचार से ही ऊँचा उठ रहा था कि यद्यपि इनका ललाट राज्यपट्ट को प्राप्त होगा परन्तु उससे ऊँचा तो मैं ही हूँ। उनके इस ललाटपट्ट पर धर्मपट्ट और राज्यपट्ट दोनों से पूजित लक्ष्मी सुशोभित होगी इस विचार से ही मानो विधाता ने उनका ललाट ऊँचा तथा चौड़ा बनाया था। उनकी सुन्दर तथा कुटिल भौंहें वेश्या के समान सुशोभित हो रही थीं। 'कुटिल है' इसलिए क्या चन्द्रमा की रेखा सुशोभित नहीं होती अर्थात् अवश्य होती है। शुभ अवयवों का विचार करनेवाले लोग नेत्रों की दीर्घता को अच्छा कहते हैं सो मालूम पड़ता है कि भगवान के नेत्र देखकर ही उन्होंने ऐसा विचार स्थिर किया होगा। यही उनके नेत्रों की स्तुति है। **(श्लोक, 399 से 422 तक)** **क्रमशः**

करणानुयोग

जानिये, कर्मों की 148 प्रकृतियाँ

घातिया कर्मों की 47 प्रकृतियाँ हैं और अघातिया कर्मों की 101 प्रकृतियाँ हैं।

घातिया कर्मों की 47 प्रकृतियाँ — ज्ञानावरण की पाँच—

1. मतिज्ञानावरण, 2. श्रुतज्ञानावरण, 3. अवधि ज्ञानावरण, 4. मनः पर्यय ज्ञानावरण, 5. केवल ज्ञानावरण।

दर्शनावरण की नौ — 1. चक्षुदर्शनावरण, 2. अचक्षुदर्शनावरण, 3. अवधिदर्शनावरण, 4. केवलदर्शनावरण, 5. निद्र, 6. निद्रा-निद्रा, 7. प्रचला, 8. प्रचला-प्रचला, 9. स्त्यानगृद्धि।

अन्तराय कर्म की पाँच — 1. दान अन्तराय, 2. लाभ अन्तराय, 3. भोग अन्तराय, 4. उपभोग अन्तराय, 5. वीर्य अन्तराय।

मोहनीय कर्म के अट्ठाईस भेद — तीन दर्शन मोह - 1. मिथ्यात्व, 2. सम्यग्मिथ्यात्व, 3. सम्यक्प्रकृति।

पच्चीस चारित्र मोह - 4. अनन्तानुबन्धी क्रोध, 5. अनन्तानुबन्धी मान, 6. अनन्तानुबन्धी माया, 7. अनन्तानुबन्धी लोभ,

8. अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, 9. अप्रत्याख्यानावरण मान,

10. अप्रत्याख्यानावरण माया, 11. अप्रत्याख्यानावरण लोभ,

12. प्रत्याख्यानावरण क्रोध, 13. प्रत्याख्यानावरण मान,

14. प्रत्याख्यानावरण माया, 15. प्रत्याख्यानावरण लोभ,

16. संज्वलन क्रोध, 17. संज्वलन मान, 18. संज्वलन माया,

19. संज्वलन लोभ, 20. हास्य, 21. रति, 22. अरति,

23. शोक, 24. भय, 25. जुगुप्सा, 26. स्त्रीवेद,

27. पुरुषवेद, 28. नपुंसकवेद।

क्रमशः

प्रथमानुयोग

कवि परिचय

पंडित जयचन्दजी : परिचय

जयपुर के प्रतिभाशाली और यशस्वी विद्वानों ने जैन साहित्य की अपूर्व सेवा की है। तत्कालीन समाज में फैले हुए अज्ञान को दूर करके उन्होंने सम्यग्ज्ञान का न बुझनेवाला दीपक जलाया, जिसका प्रकाश भारत के कोनों-कोनों में पहुँचा। पंडित जयचन्दजी छाबड़ा उन्हीं में से एक थे। आज हम उन्हीं के संबंध में कुछ प्रकाश डालते हैं।

सर्वार्थसिद्धि की वचनिका की अंतिम प्रशस्ति में पंडित जयचंद्रजी ने अपना कुछ परिचय स्वयं दिया है। उससे उनके जीवनवृत्त पर काफी प्रकाश पड़ता है। उसमें लिखा है कि वे फागई (फागी) ग्राम में, जो जयपुर से तीस मील की दूरी पर डिग्गी मालपुरा रोड पर स्थित है, पैदा हुए थे। उनके पिता का नाम मोतीराम था। गोत्र छाबड़ा था और श्रावक (जैन) धर्म के अनुयायी (सरावगी) थे। परिवार में शुभ क्रियाओं का पालन होता था। परंतु स्वयं ग्यारह वर्ष की अवस्था तक जिनवाणी को भूले रहे – जब ग्यारह वर्ष हो गये तब जिनमार्ग को जानने का ध्यान आया। इसे उन्होंने अपना इष्ट एवं शुभोदय समझा। उसी ग्राम में एक दूसरा जिन मंदिर था, जिसमें तेरापंथ की शैली थी और लोग देव, धर्म तथा गुरु की श्रद्धा-उत्पादक कथा (वचनिका-तत्त्वचर्चा) किया करते थे। पंडित जयचंदजी भी अपना हित जानकर वहाँ जाने लगे और चर्चा-वार्ता में रस लेने लगे। इससे वहाँ उनकी श्रद्धा दृढ़ हो गई और सब मिथ्या बुद्धि छूट गई। कुछ समय बाद वे निमित्त पाकर फागई से जयपुर आ गये। वहाँ तत्त्व-चर्चा करनेवालों की उन्होंने बहुत बड़ी शैली देखी, जो उन्हें अधिक रुचिकर लगी। उस समय वहाँ गुणियों, साधर्मीजनों और ज्ञानी पंडितों का अच्छा समागम था। पंडित बंशीधरजी उनसे पहले हो चुके थे, जो बड़े प्रभावशाली तथा अच्छे विचारवान् थे। पंडित टोडरमलजी उनके समय में थे। वे बड़े तीक्ष्णबुद्धि थे। उनकी गोम्मटसार-वचनिका की प्रशंसा सभी करते थे। उसी का वाचन, पठन-पाठन और मनन चलता था तथा लोग अपनी बुद्धि बढ़ाते थे। पंडित दौलतरामजी कासलीवाल बड़े गुणी थे और 'पंडितराय' कहे जाते थे। राजपरिवार में वे आते जाते थे। उन्होंने तीन पुराणों की वचनिकाएं की थीं। उनकी सूक्ष्म बुद्धि की सर्वत्र संस्तुति होती थी। भाई रायमल्लजी और शीलव्रती महारामजी भी उस शैली में थे। पंडित जयचंदजी इन्हीं गुणीजनों तथा विद्वानों की संगति में रहने लगे थे। और अपनी बुद्धि-अनुसार जिनवाणी (शास्त्रों) के स्वाध्याय में प्रवृत्त हो गये थे। उन्होंने जिन ग्रंथों का मुख्य स्वाध्याय किया था,

उनका नामोल्लेख उन्होंने इसी प्रशस्ति में स्वयं किया है। सिद्धांत ग्रंथों के स्वाध्याय के अतिरिक्त न्याय ग्रंथों तथा अन्य दर्शनों के ग्रंथों का भी उन्होंने अभ्यास किया था। उनकी वचनिकाओं से भी उनकी बहुश्रुतता प्रकट होती है। लगता है कि पंडित टोडरमलजी जैसे अलौकिक प्रतिभा के धनी विद्वानों के संपर्क से ही उनकी प्रतिभा जागृत हुई और उन्हें अनेक ग्रंथों की वचनिकाएं लिखने की प्रेरणा मिली।

उक्त प्रशस्ति के आरंभ में राज-संबंध का भी वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है[1] कि जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्य खंड के मध्य में 'ढुढाहड' देश है। उसकी राजधानी 'जयपुर' नगर है। वहां का राजा 'जगतेश' (जगतसिंह) है, जो अनुपम है और जिसके राज्य में सर्वत्र सुख-चैन है तथा प्रजा में परस्पर प्रेम है। सब अपने-अपने मतानुसार प्रवृत्ति करते हैं, आपस में कोई विरोध-भाव नहीं है। राजा के कई मंत्री हैं। सभी बुद्धिमान और राजनीति में निपुण हैं। तथा सब ही राजा का हित चाहनेवाले एवं योग्य प्रशासक हैं। इन्हें में एक रायचन्द हैं, जो बड़े गुणी हैं और जिन पर राजा की विशेष कृपा है। यहाँ विशेष कृपा के उल्लेख से जयचंदजी का भाव राजा द्वारा उन्हें 'दीवान' पद पर प्रतिष्ठित करने का जान पड़ता है।

इसके आगे इसी प्रशस्ति में रायचंदजी के धर्म प्रेम साधर्मी वात्सल्य आदि गुणों की चर्चा करते हुए उन्होंने उनके द्वारा की गई उस चंद्रप्रभ जिनमंदिर की प्रसिद्ध प्रतिष्ठा का, जो वि.सं. 1861 में हुई थी, उल्लेख किया है। इस प्रतिष्ठा से रायचंदजी के यश एवं पुण्य की वृद्धि हुई थी; और समस्त जैन संघ को बड़ा हर्ष हुआ था।

प्रशस्ति में पंडित जयचंदजी ने उनके साथ अपने विशेष संबंध का भी संकेत किया है। उनके इस संकेत से ज्ञात होता है कि रायचंदजी ने उन्हें निश्चित एवं नियमित आर्थिक व्यवस्था करके अर्थ-चिंता से मुक्त कर दिया था; और इसी से वे एकाग्रचित्त हो सर्वार्थसिद्धि-वचनिका लिख सके थे, जिसके लिखने के लिए उन्हें अन्य साधर्मीजनों ने प्रेरणा की थी और उनके पुत्र नंदलालजी ने भी अनुरोध किया था।

पंडित जयचंदजी ने अपने पुत्र पंडित नंदलाल की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि वह बचपन से विद्या को पढ़ता सुनता था। फलत: वह अनेक शास्त्रों में प्रवीण पंडित हो गया था। मूलाचार-वचनिका की प्रशस्ति में भी, जो पंडित नंदलालजी के सहपाठी शिष्य ऋषभदासजी निगोत्या द्वारा लिखी गई है, नंदलालजी को पंडित जयचंदजी जैसा बहुज्ञानी बताया गया है। प्रमेयरत्नमाला-वचनिका की प्रशस्ति (पद्य 16) से यह भी मालूम होता है कि पंडित नंदलालजी ने अपने पिता पंडित जयचंदजी की इस वचनिका का संशोधन किया था। इससे पंडित नंदलालजी की

सूक्ष्म बुद्धि और शास्त्रज्ञता का पता चलता है। पंडित नंदलालजी दीवान अमरचंदजी की प्रेरणा पाकर मूलाचार की पाँच सौ सोलह गाथाओं की वचनिका कर पाये थे कि उनका स्वर्गवास हो गया था। बाद में उस वचनिका को ऋषभदासजी निगोत्या ने पूरा किया था।

यहाँ पर एक बात और ज्ञातव्य है। वह यह कि पंडित जयचंदजी की वचनिकाओं से सर्व साधारण को लाभ तो पहुँचा ही है, पंडित भागचंदजी (वि. सं. 1913) जैसे विद्वानों के लिए भी वे पथ-प्रदर्शिका हुई हैं। प्रमाण परीक्षा की अपनी वचनिका-प्रशस्ति में वे पंडित जयचंदजी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि उनकी वचनिकाओं को देखकर मेरी भी ऐसी बुद्धि हुई, जिससे मैं प्रमाण-शास्त्र का उत्कट रसास्वाद कर सका और अन्य दर्शन मुझे नीरस जान पड़े।

पंडित जयचंदजी का समय सुनिश्चित है। इनकी प्राय: सभी कृतियों (वचनिकाओं) में उनका रचना-काल दिया हुआ है। जन्म वि.सं. 1795 और मृत्यु वि.सं. 1881-82 के लगभग मानी जाती है। रचनाओं का आरंभ वि.सं. 1859 से होता है और वि.सं. 1874 तक वह चलता है। प्राप्त रचनाएं इन सोलह वर्षों की ही रची उपलब्ध होती हैं। इससे मालूम होता है कि ग्यारह वर्ष की अवस्था से चौंसठ वर्ष की अवस्था तक अर्थात् तिरेपन वर्ष उन्होंने शास्त्रों के गहरे पठन-पाठन एवं मनन में व्यतीत किये। और तदुपरान्त ही परिणतवय में साहित्य-सृजन किया था। अत: पंडित जयचन्दजी का अस्तित्व-समय वि.सं. 1795-1882 है।

इनकी मौलिक रचनाएँ और वचनिकाएँ दोनों प्रकार की कृतियां उपलब्ध हैं। पर अपेक्षाकृत वचनिकाएँ ही अधिक हैं। वे कृतियां निम्न प्रकार हैं :-

	कृति	**रचना-काल**
1.	तत्वार्थ सूत्र-वचनिका	वि.सं. 1859
2.	सर्वार्थसिद्धि-वचनिका*	चैत्र शुक्ला 5 सं. 1861
3.	प्रमेयरत्न माला वचनिका*	अषाढ़ शुक्ल 4 सं. 1863
4.	स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा-वचनिका*	श्रावण कृ. 3 सं. 1863
5.	द्रव्यसंग्रह-वचनिका*	श्रावण कृ. 14 सं. 1863
6.	समयसार-वचनिका (आत्मख्याति संस्कृत-टीका सहित की)	कार्तिक कृ. 10 सं. 1864
7.	देवागम स्तोत्र आप्त मीमांसा-वचनिका*	चैत्र कृ. 14 सं. 1866
8.	अष्टपाहुड़-वचनिका*	भाद्र शुक्ला 12 सं. 1867

9. ज्ञानार्णव-वचनिका* माघ कृ. 5 सं. 1869
10. भक्तामर-स्तोत्र-वचनिका कार्तिक कृ. 12 सं. 1870
11. पद संग्रह 246 मौलिक पदों का संग्रह अषाढ़ शु. 10 सं. 1874
12. सामायिक पाठ-वचनिका
13. पत्र परीक्षा-वचनिका
14. चन्द्रप्रभ चरित-द्वितीयसर्ग वचनिका
15. मतसमुच्चय-वचनिका
16. धन्यकुमार-चरित वचनिका

इन रचनाओं का परिचय उनके नाम से ही विदित हो जाता है।

पंडित जयचंदजी की इन कृतियों से उनकी वाङ्मय सेवा का अच्छा मूल्यांकन किया जा सकता है। इन सबके अक्षरश: अध्ययन का तो मुझे अवसर नहीं मिला; किंतु उनकी सर्वार्थसिद्धि-वचनिका का और हाल में श्री गणेशप्रसाद वर्णी ग्रंथमाला द्वारा प्रकाशित द्रव्य संग्रह-वचनिका के संपादन तथा प्रकाशन के समय उसका अध्ययन करने का सौभाग्य अवश्य मिला। इस अध्ययन से उनकी सिद्धांत मर्मज्ञता, प्रामाणिक व्याख्यातृता, बहुश्रुतता, संस्कृत-प्राकृत हिन्दी भाषाओं की विज्ञता और हिन्दी गद्य-पद्य कर्तृता के अनुभव के साथ उनकी निष्ठा, सरलता, भद्रता और निरहंकारता का भी विशेष परिचय मिला। छाबड़ाजी की यह महान् शासन-सेवा एवं साहित्यिक कृतियां निश्चय ही उन्हें चिरस्मरणीय रखेंगी। हमारा विश्वास है कि पंडित जयचंदजी, पंडित टोडरमलजी, पंडित दौलतरामजी कासलीवाल, पंडित सदासुखजी प्रभृति जयपुर के विद्वानों की वाङ्मय-सेवा को समाज कभी भुला नहीं सकता-श्रद्धा और कृतज्ञता के साथ उसे सदा स्मरण रखेगा। ●● साभार - आत्मधर्म (टोडरमलांक), 1967

...पृष्ठ 17 का शेष

ध्यान करे तो एकत्व ज्यों का त्यों बना रहे और विकल्प मन्द पड़े इसलिए ऐसा लगे कि मुझे शान्ति मिली; परन्तु वह तो मन्द कषाय है। परन्तु जिसे विकल्प को पकड़ने की सूक्ष्मता न हो उसे ऐसा हो जाता है; परन्तु यदि भेदज्ञान का अभ्यास करे कि मैं ज्ञायक हूँ, यह सब मुझसे भिन्न है तो उसे सच्चा आने का अवसर आता है, नहीं तो भूल हो जाती है अर्थात् भ्रमणा हो जाती है।

<u>बालवाटिका</u>

सीख, जो जीवन–व्रत बन गयी

गाँधीजी उन दिनों साबरमती आश्रम में रहते थे। एक बार एक युवक उनके पास रहने आया। एक दिन वह युवक आश्रम की एक छोटी–सी लड़की के साथ खेल रहा था। उसके हाथ में एक नींबू था। लड़की उस नींबू को लेना चाहती थी। वह उछलती, पर युवक हाथ ऊँचा कर लेता।

जब लड़की किसी तरह नहीं मानी तो युवक ने हाथ घुमाया और झटका देकर झूठ–झूठ बोला–यह लो, नींबू को मैंने नदी में फेंक दिया। लड़की ने उसकी बात मान ली, फिर वे दोनों चलने लगे। थोड़ी दूर चलने पर युवक रूमाल निकाला तो उसके हाथ से नींबू निकल कर नीचे गिर पड़ा।

लड़की ने नींबू को धरती पर पड़ा देखा तो वह उसकी ओर झपटी नहीं, किन्तु गम्भीर होकर बोली – तुमने मुझसे झूठ बोला। मैं बापू जी से कहूँगी कि तुम झूठे हो।

इसके बाद वह गाँधीजी के पास गयी और उसने सारी बात कह दी। शाम को प्रार्थना के बाद गाँधीजी ने उस युवक को बुलाया। युवक ने सारी बात बता दी – बापू! मैंने जो किया, वह मजाक था।

गाँधीजी ने कहा – यह बुरी बात है। मजाक में भी झूठ नहीं बोलना चाहिए। मजाक में की गयी बातें आगे चलकर आदत बन जाती हैं।

गाँधीजी की बात में सच्चाई थी। युवक ने वह समझी और उस दिन से उसने हँसी में भी झूठ नहीं बोला।

शिक्षा – जिसे हम हँसी–मजाक समझते हैं, ऐसी बुरी बातों को आदतों में बदलते देर नहीं लगती। अतः गलत बातों से किसी भी प्रकार से बचा जाना चाहिए।

करणानुयोग

गतांक अगस्त 2023 से आगे

श्रुत परम्परा एवं श्रुतज्ञान का स्वरूप

प्रश्न : स्वाध्याय का लक्षण तो अध्ययन कहा है। यह लक्षण प्रश्न में कैसे घटित होता है ? प्रश्न तो अध्ययन नहीं है ?

उत्तर : प्रश्न अध्ययन की प्रवृत्ति में निमित्त है। प्रश्न से अध्ययन को बल मिलता है, इसलिए वह भी स्वाध्याय है।

अनुप्रेक्षा :

साऽनुप्रेक्षा यदभ्यासोऽधिगतार्थस्य चेतसा।
स्वाध्यायलक्ष्म पाठोऽन्तर्जल्पात्माऽत्रापि विद्यते॥

- अनगार धर्मामृत, 7/86, पृष्ठ 536

अर्थात् जाने हुए या निश्चित हुए अर्थ का मन से जो बार-बार चिन्तन किया जाता है, व अनुप्रेक्षा है। इस अनुप्रेक्षा में भी स्वाध्याय का लक्षण अन्तर्जल्प रूप पाठ आता है। अनित्यत्व आदि बारह प्रकार की अनुप्रेक्षाओं का चिन्तवन करना, अनुप्रेक्षा है।

धर्मकथा :

आम्नायो घोषशुद्धं यद् वृत्तस्य परिवर्तनम्।
धर्मोपदेशः स्याद्धर्मकथा संस्तुतिमङ्गला॥

- अनगार धर्मामृत, 7/87, पृष्ठ 536

अर्थात् पढ़े हुए ग्रंथ के शुद्धतापूर्वक पुनः पुनः उच्चारण को आम्नाय कहते हैं और देव वन्दना के साथ मंगल पाठपूर्वक धर्म का उपदेश करने को धर्मकथा कहते हैं।

धर्मकथा के चार भेद हैं—

आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेजनी एवं निर्वेजनी धर्मकथा।

आक्षेपणी धर्मकथा : जिस कथा में ज्ञान और चारित्र का कथन किया जाता है कि मति आदि ज्ञानों का यह स्वरूप है और सामायिक आदि चारित्र का यह स्वरूप है, उसे आक्षेपणी धर्मकथा कहते हैं।

विक्षेपणी धर्मकथा : जिस कथा में स्वसमय और परसमय का कथन किया जाता है, वह विक्षेपणी है। जैसे वस्तु सर्वथा नित्य है या सर्वथा क्षणिक है, या सर्वथा एक ही है या सर्वथा अनेक ही है या सब सत्स्वरूप ही है या विज्ञानरूप ही है या सर्वथा शून्य है इत्यादि। परसमय को पूर्वपक्ष के रूप में उपस्थित करके प्रत्यक्ष अनुमान और आगम से उसमें विरोध बतलाकर कथंचित् नित्य, कथंचित् अनित्य, कथंचित् एक, कथंचित् अनेक इत्यादि स्वसमय का निरूपण करना, विक्षेपणी कथा है।

भगवती आराधना, विजयोदया टीका, गाथा 655, पृष्ठ 440

संवेजनी धर्मकथा : ज्ञान, चारित्र और तप के अभ्यास से आत्मा में कैसी-कैसी शक्तियाँ प्रकट होती है। इनका निरूपण करनेवाली कथा संवेजनी है।

निर्वेजनी धर्मकथा : शरीर, भोग और भवसन्तति की ओर से विमुख करनेवाली कथा, निर्वेजनी है। जैसे शरीर, अशुचि है, क्योंकि वह रस आदि सात धातुओं से बना है। रज और वीर्य उसके बीज है। अशुचि आहार से वह बढ़ता है और अशुचि स्थान से निकलता है।

शरीर केवल अपवित्र ही नहीं है, वह निस्सार भी है, क्योंकि प्राणियों का शरीर स्वभाव से अनित्य है - ऐसा शरीर के विषय में सुना जाता है।

स्त्री, वस्त्र, गन्ध माला, भोजन आदि दुर्लभ भोग किसी तरह प्राप्त होने पर भी तृप्ति नहीं देते। उनके प्राप्त न होने पर अथवा प्राप्त होकर नष्ट होने पर महान शोक होता है तथा देव और मनुष्य भव भी दुर्लभ है, दुःख से भरे हैं, सुख अल्प है। इस प्रकार का कथन निर्वेजनी धर्मकथा है।

स्तुति रूप, मंगल रूप स्वाध्याय का वर्णन पण्डित आशाधरजी विस्तार से कहते हैं, उसी को यथावत् यहाँ दे रहे हैं —

स्तुति रूप स्वाध्याय में प्रवृत्त मुमुक्षु की मनोवृत्ति निर्मल ज्ञानघन स्वरूप अर्हन्त भगवान के गुणों के समूह में आग्रही होने के कारण आसक्त रहती है। उसकी वचन प्रवृत्ति भगवान के गुणों की व्यक्ति से भरे हुए और नई-नई

उक्तियों से मधुर स्तोत्रों के प्रकट उल्लास को लिये हुए हेती है तथा उसकी शरीर–यष्टि (शरीर का आकार) ऐसी होती है, मानो वह विनय से बनी है।

इस तरह वह ज्ञानी अपनी अनिर्वचनीय आत्मशक्ति को प्रकट करता है, जिससे वह मोह जीतने वालों की अग्र पंक्ति को पाता है।

विशेषार्थ - भगवान अर्हन्त देव के अनुपम गुणों का स्तवन भी स्वाध्याय ही है।

जो मन–वचन–काय को एकाग्र करके स्तवन करता है, वह एक तरह से अपनी आत्मशक्ति को ही प्रकट करता है। कारण यह है कि स्तवन करनेवाले का मन तो भगवान के गुणों में आसक्त रहता है, क्योंकि वह जानता है कि शुद्ध ज्ञानघनस्वरूप परमात्मा के ये ही गुण हैं। उसके वचन स्तोत्र पाठ में संलग्न रहते हैं, जिनमें नई–नई बातें आती हैं। स्तोत्र पढ़ते हुए पाठक विनम्रता की मूर्ति होता है। **क्रमशः**

नवम्बर 2023 माह के मुख्य जैन तिथि–पर्व

1 नवम्बर – कार्तिक कृष्ण 4
श्री संभवनाथ ज्ञानकल्याणक

5 नवम्बर – कार्तिक कृष्ण 8 **अष्टमी**

11 नवम्बर – कार्तिक कृष्ण 13
श्री पद्मप्रभ जन्म–तप कल्याणक

12 नवम्बर – कार्तिक कृष्ण 14
चतुर्दशी

13 नवम्बर – कार्तिक कृष्ण 15
दीपावली
महावीर मोक्ष कल्याणक

15 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 2
पुष्पदंत ज्ञान कल्याणक

19 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 7
नेमिनाथ गर्भ कल्याणक

20 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 8 **अष्टमी**
अष्टाह्निका व्रत प्रारम्भ

24 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 12
अरनाथ ज्ञान कल्याणक

26 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 14
चतुर्दशी
अनंतनाथ गर्भ कल्याणक

27 नवम्बर – कार्तिक शुक्ल 30
अष्टाह्निका व्रत समाप्त
संभवनाथ जन्म कल्याणक

11 से 14 नवम्बर 2023 – आध्यात्मिक शिक्षण शिविर, **तीर्थधाम मङ्गलायतन**

15 से 16 नवम्बर 2023 – वेदी शिलान्यास चिदोत्सव, **तीर्थधाम चिदायतन**

''जिस प्रकार–उसी प्रकार'' में छिपा रहस्य

जिस प्रकार– लोक में भी शील को प्रशंसनीय कहा जाता है।

उसी प्रकार– मुक्तिमार्ग में स्वानुभव ही पूज्यनीय,प्रशंसनीय और आनन्दमय है।

जिस प्रकार– हीरे की खान में खुदाई करते हुए मिट्टी–पत्थर आदि मिलते है। गहरे उतरने में कठिनाइयां बढ़ती जाती हैं परन्तु साहस, विश्वास और उत्साहपूर्वक खोदते जाते है। अन्ततः हीरे को प्राप्त कर ही लेते है।

उसी प्रकार– स्वाध्याय, तत्त्व विचारपूर्वक उतरते हुए उपयोग की एकाग्रता बढ़ाते हुए शुद्ध रत्नत्रय को प्राप्त कर ही लेते है।

जिस प्रकार– जगत में एक गाय की पूंछ के लम्बे बाल झाड़ी में उलझ गये पीछे शिकारी मारने को आ रहे थे, वह गाय बालों के लोभ के कारण भाग नहीं पायी। अतः शिकारियों द्वारा मौत को प्राप्त हो गयी ।

उसी प्रकार– जो लोग लोभ, लालच और तृष्णा के वश हैं उनकी ऐसी ही दुर्दशा होती है, ऐसी ही विपत्तियाँ आती रहती हैं।

जिस प्रकार– अच्छे अनाज के पकने के साथ भूसा भी होता है।

उसी प्रकार– धर्मात्मा को धर्मदशा होने पर (साथ में रहे हुए शुभ सारांस के कारण) पुण्य भी बँध जाता है। इस प्रकार पंच परमेष्ठी की भक्ति करने से ऐसा प्रयोजन तो स्वयं ही सिद्ध होता है।

जिस प्रकार– आम के वृक्ष से निबौरी उत्पन्न हो ही नहीं सकती है।

उसी प्रकार– आत्म स्वभाव में विकार उत्पन्न करने की शक्ति नहीं है।

जिस प्रकार– जब बड़े–बड़े जंगलों में आग लग जाती है, उसे बुझाने के लिए मूसलधार वर्षा चाहिए।

उसी प्रकार– संसार में आकुलतारूपी अग्नि जल रही है उसे बुझाने के लिए आत्मा की शुद्ध परिणति रूपी शान्त जल की जोरदार वर्षा चाहिए।

जिस प्रकार– चंदन के वृक्ष में शीतलता के कारण सर्प उससे लिपटे रहते है।

उसी प्रकार– मुनिराज चैतन्य रूपी चंदन वृक्ष में शीतलता के कारण उससे लिपटे रहते है अर्थात् चैतन्य परिणति में ही बस जाते है।

जिस प्रकार– पानी देनेवाले बादल ऊँचे होते है और संग्रह करनेवाला समुद्र नीचे है।

उसी प्रकार– जो वक्ता श्रोता के पास से मान या धन माँगे तो श्रोता ऊँचा और वक्ता नीचे हो जाते है, बादल अपने को बोध देते है कि देने में ही भलाई है। माँगने में तो नीचा होना पड़ता है।

क्रमशः संकलन – प्रो० पुरुषोत्तमकुमार जैन, रुड़की

समाचार-दर्शन

तीर्थधाम मङ्गलायतन द्वारा

दशलक्षण पर्व में धर्मप्रभावना

तीर्थधाम मङ्गलायतन में दसलक्षण पर्व के उपलक्ष्य में बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबहन, जयपुर; पंडित विक्रांत शास्त्री, सोलापुर; पंडित गौतम शास्त्री, जयपुर एवं पण्डित समकित शास्त्री, मंगलायतन का लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम—जिनेन्द्र प्रक्षाल, पूजन एवं दसलक्षण विधान द्वारा प्रात:काल की मंगलमय शुरुआत हुई। आराधना के इसी क्रम में पूज्य गुरुदेवश्री की सीडी द्वारा परमात्मप्रकाश ग्रन्थ एवं पंडित विक्रांत शास्त्री द्वारा श्री इष्टोपदेश का स्वाध्याय हुआ।

दोपहर में बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबहन द्वारा महान सिद्धांतग्रंथ श्री षटखंडागम (भाग 4, पुस्तक 12) की मंगलमयी वाचना हुई।

पंडित गौतम शास्त्री के माध्यम से आध्यात्मिक पाठ एवं पंडित विक्रांत शास्त्री द्वारा मङ्गलार्थियों के लिए उत्कृष्ठ तकनीक के माध्यम से तीन लोक विषय पर विशेष कक्षा का लाभ दिया गया। सायंकाल में मङ्गलार्थियों द्वारा दसलक्षण धर्मों पर स्वाध्याय हुआ। पश्चात् जिनेन्द्र भक्ति एवं क्षमापना द्वारा भावों में निर्मलता का प्रवाह हुआ। तत्पश्चात् बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबहन के माध्यम से दसलक्षण धर्मों पर जीवनोपयोगी स्वाध्याय का समागम मिला तथा रात्रि में मङ्गलार्थियों द्वारा ज्ञानवर्धक एवं रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से तत्त्वज्ञान की अविरल धारा का आधुनिक रूप में पल्लवन किया गया।

सभी साधर्मी, परिवारिजन एवं मङ्गलार्थियों ने अपूर्व लाभ लिया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन मङ्गलार्थी समकित शास्त्री, मङ्गलायतन एवं समस्त मङ्गलार्थियों द्वारा किया गया।

इसी अवसर पर अनेकानेक मङ्गलार्थी छात्रों द्वारा भी दशलक्षण पर्व में अनेक स्थानों— मङ्गलार्थी अनुभव जैन, मौ-पुणे में; अनुभव जैन, करेली-मुम्बई; शान्तनु जैन, ग्वालियर-नोएडा; शुद्धात्म जैन, भीलवाडा-दिल्ली; हिमालय जैन, सेमारी-निधौलीकलां; अनुभव जैन जबलपुर-अहमदाबाद; सुलभ जैन, मुम्बई; एकत्व जैन, खनियांधाना-पंघाना; प्रतीक जैन, सेमारी-गौरझामर; अभिषेक जैन, उभेगाँव-आरोन; अंकित जैन, आरोन-सनावद; रांझी जबलपुर मङ्गलार्थी प्रतीक जैन; धुलियागंज

आगरा मङ्गलार्थी एकत्व पुजारी; मङ्गलार्थी आप्तअनुशीलन वासुपूज्य निलय शिवपुरी आदि ने दशलक्षण के अवसर पर जिनागम के अनेकानेक विषयों पर सारगर्भित व्याख्यानों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा समाज में धार्मिक समरसता का वातावरण तैयार किया। जिससे महती धर्म प्रभावना हुई।

मंगल आमंत्रण

तीर्थधाम मङ्गलायतन : ऐतिहासिक पौराणिक नगरी विश्व धरोहर हस्तिनापुर की पावन धरा पर स्थित तीर्थधाम चिदायतन के भव्य वेदी शिलान्याश का गूंजा मंगल गान, यह वेदी शिलान्यास का कार्यक्रम 15 नवम्बर से 16 नवम्बर 2023 तक होने जा रहा है।

जिसकी मंगल सूचना के लिए दशलक्षण के पुनीत अवसर पर तीर्थधाम मङ्गलायतन से पण्डित अशोक लुहाड़िया एवं पण्डित अभिषेक जैन शास्त्री ने मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र के विभिन्न स्थानों पर जाकर मंगल आमंत्रण दिया एवं दशलक्षण पर्व की विशेष आराधना की मध्यप्रदेश में ग्वालियर से सर्व प्रथम शुरुआत की पश्चात भिंड, गुना, आरोन, अशोकनगर, बीना और छिंदवाड़ा, पश्चात महाराष्ट्र के नागपुर, कारंजा, वाशिम, हिंगोली एवं औरंगाबाद आदि स्थानों पर जाकर सभी समाज को इस कार्यक्रम में पधारने की मंगल सूचना प्रदान की एवं पण्डित सुधीर शास्त्री द्वारा दिल्ली के आत्मार्थी ट्रस्ट, रोहतक, शंकरनगर, विश्वासनगर, बहादुरगढ़, जनकपुरी, पीरागढ़ी, शिवाजी पार्क, सरस्वती विहार, राजपुर रोड और उत्तरप्रदेश में मेरठ में आमन्त्रण दिया गया। आमन्त्रण में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अजितप्रसाद जैन, श्री आदीश जैन, श्री नवनीत जैन एवं विद्वान् पण्डित संदीप शास्त्री का भी विशेष योगदान रहा।

इसी श्रृंखला में डॉ. सचिन्द्र शास्त्री एवं पण्डित रमेशजी सनावद द्वारा भी राजस्थान के अलवर, जयपुर, किशनगढ़, अजमेर, भीलवाड़ा, बेगू, सिंगोली, बिजौलियां, पिडावा, कोटा व मध्य प्रदेश में रतलाम, उज्जैन, इन्दौर, भोपाल, विदिशा, सागर के विभिन्न स्थानों एवं मुमुक्षु मण्डलों में **तीर्थधाम चिदायतन के वेदी शिलान्यास कार्यक्रम का मङ्गल आमन्त्रण दिया गया।** सभी स्थानों पर साधर्मी भाई–बहिनों ने उत्साहपूर्वक आमन्त्रण स्वीकार किया एवं कार्यक्रम में पधारने की अपनी भावना भी व्यक्त की है।

मंगल सान्निध्य

अत्यन्त प्रसन्नता का प्रसंग है कि दशलक्षण धर्म के पश्चात् तीर्थधाम मङ्गलायतन में बालब्रह्मचारी सुमतप्रकाशजी खनियांधाना पधार चुके हैं। आपके व आपके सहयोगी बालब्रह्मचारी चर्चित खनियांधाना के द्वारा भी धार्मिक कक्षाओं का उत्साहपूर्वक लाभ

विद्यार्थी वर्ग और सम्पूर्ण कार्यक्रमों का लाभ मङ्गलायतन परिवार ले रहा है। अतः इस अवसर पर जो भी साधर्मी भाई-बहिन पधारकर धर्मलाभ लेना चाहते हैं। वे सभी साधर्मी सादर आमन्त्रित हैं। उनके आवास एवं भोजन की व्यवस्था समुचित रहेगी।

सम्पर्कसूत्र – श्री अशोक बजाज, 9319811708, 9756633800

षट्खण्डागम ग्रन्थ की वाचना अनवरत प्रवाहित
बारहवीं पुस्तक की वाचना 24 अगस्त 2023 से प्रारम्भ

विद्वत् समागम – आदरणीय बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन, जयपुर एवं सहयोगी भाई-बहिनों तथा मङ्गलायतन परिवार का भी लाभ प्राप्त होता है।

दोपहर 01.30 से 03.15 तक (प्रतिदिन)	**षट्खण्डागम (धवलाजी)**
रात्रि 07.30 से 08.30 बजे तक	मूलाचार ग्रन्थ का स्वाध्याय
08.30 से 09.15 बजे तक	**समयसार ग्रन्थाधिराज के कलशों का व्याकरण के नियमानुसार शुद्ध उच्चारण सहित सामान्यार्थ**

नोट—इस कार्यक्रम में आप ZOOM ID-9121984198,
Password - tm@4321
● youtube channel - theerthdham mangalayatan
के माध्यम से भी शामिल हो सकते हैं।

वैराग्य समाचार

रानीपुर : श्री कपूरचन्दजी जैन का देह परिवर्तन शान्तपरिणामपूर्वक हो गया है। आप स्वाध्याय एवं जिनमन्दिरकी गतिविधियों में संलग्न रहते थे और समाज को एकता के सूत्र का पाठ पढ़ानेवाले व्यक्तित्व थे। आप डॉ. योगेशचन्द जैन, अलीगंज के ससुरजी थे।

मेरठ : श्रीमती शारदा जैन का देह परिवर्तन शान्तपरिणामपूर्वक हो गया है। तीर्थधाम चिदायतन के प्रति अपूर्व समर्पण और सहयोगी महिला थीं। जिनका सम्पूर्ण जीवन देव-शास्त्र-गुरु-धर्म के प्रति समर्पित रहा। आप श्री सुभाष जैन, मेरठ की धर्मपत्नी थीं।

तीर्थधाम मङ्गलायतन परिवार दिवंगत आत्मा के सुगतिगमन, बोधिलाभ एवं शीघ्र मुक्ति प्राप्ति की भावना भाता है।

दशलक्षण महापर्व पर विदेशों में विशेष प्रभावना

न्यूजर्सी, अमेरिका : श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में दशलक्षण महापर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। यह अमेरिका का एकमात्र ऐसा जैन मन्दिर है, जो पूर्णतः दिगम्बर है। इस अवसर पर यहाँ प्रतिदिन प्रातः जिनेन्द्र पूजन व डॉ. वीरसागर शास्त्री, दिल्ली के दशलक्षण धर्मों पर अत्यधिक सरल, सुबोध शैली में व्याख्यान हुए।

रात्रि में तत्त्वार्थसूत्र के एक-एक अध्याय का पाठ किया गया, तत्पश्चात् उस अध्याय में आये हुए आध्यात्मिक सूत्रों का डॉ. वीरसागर शास्त्री द्वारा विशेष स्पष्टीकरण किया गया। समस्त कार्यक्रम में 200 से अधिक साधर्मियों की उपस्थिति रही।

नैरोबी, केन्या : श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल नैरोबी के तत्त्वावधान में दशलक्षण महापर्व सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भारत से पधारे पण्डित देवेन्द्र जैन, बिजौलिया के गुरुदेवश्री के प्रवचनों पर मंथनात्मक विशेष व्याख्या हुए एवं रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति, बाल कक्षा के तत्पश्चात् मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुए।

सियटल, यूएसए : जैन सोसाइटी का सियटल के आयोजकत्व में दशलक्षण महापर्व हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित संजय शास्त्री, कोटा द्वारा प्रातः काल प्रक्षाल-पूजन एवं दशलक्षण विधान कराया गया, तदोपरान्त दशधर्म विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुए तथा रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति व जिनागम के विविध सिद्धान्तों पर व्याख्यानों का लाभ मिला। इसी के मध्य अलग-अलग स्थान पर जिनेन्द्र भक्ति तथा कथा वाचन का आयोजन किया गया।

लॉस एंजिल्स, यूएसए : जैन सेन्टर ऑफ सॉरहर्न कैलिफोर्निया के तत्त्वावधान में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर मुम्बई से विदुषी स्वानुभूति शास्त्री को आमन्त्रित किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन जिनेन्द्र प्रक्षाल-पूजन, आध्यात्मिक भक्ति एवं स्वानुभूति शास्त्री, मुम्बई के जिनागम के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त, जो जीवन जीने की कला सिखाते है, उन विषयों पर सरल शैली में व्याख्यान हुए। सभी साधर्मियों ने उत्साहपूर्वक दशलक्षण महापर्व का आनन्द लिया।

मोना, यूएसए : मुमुक्षु मण्डल ऑफ नॉर्थ अमेरिका के संयोजकत्व में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर डॉ. अरुण शास्त्री, जयपुर के व्याख्यानों का ऑनलाइन माध्यम से लाभ लिया। समयसार के सर्वविशुद्ध ज्ञानाधिकार पर गहन व आध्यात्मिक चर्चा की गयी।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : क्षमा - अहिंसा - पत्रकारिता सम्पन्न

तीर्थधाम मङ्गलायतन : उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ (संस्कृति विभाग, उ.प्र. सरकार) एवं तीर्थधाम मङ्गलायतन, सासनी, हाथरस, उ.प्र. के संयुक्त तत्त्वावधान में तीर्थंकर महावीर 2550वाँ मोक्ष कल्याणक के अन्तर्गत क्षमावाणी पर्व - 2023 के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय संगोष्ठी क्षमा - अहिंसा - पत्रकारिता विषय पर दिनांक : 07-08 अक्टूबर 2023, को पाँच सत्रों में संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता—श्री पी. के. दशोरा, कुलपति, मङ्गलायतन विश्वविद्यालय के द्वारा की गयी। प्रो. अभयकुमार जैन, जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ का परिचय दिया, बीजक व्याख्यान जिसमें श्री अखिल बंसल, जयपुर के द्वारा दिया गया। डॉ. योगेश जैन, अलीगंज ने पत्रकारिता विषय की संगोष्ठी पर प्रकाश डाला।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता—प्रो. (डॉ.) बी. एल. सेठी, डीलिट्, जयपुर ने की। श्री राजीव प्रचण्डिया, अलीगढ़; डॉ. अनूपचन्द, फिरोजाबाद; डॉ. अंकुर, भोपाल आदि ने पत्रकारिता और अहिंसा विषय पर अपना सारगर्भित विषय प्रस्तुत किया। इसी अवसर पर समयसार दृष्टान्त सौन्दर्य पुस्तक का विमोचन तीर्थधाम मङ्गलायतन के सचिव श्री स्वप्निल जैन द्वारा किया गया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता—श्री शैलेन्द्र जैन, एड., अलीगढ़ ने की। जिसमें पत्रकारिता विषय पर डॉ. रीना सिन्हा, मुम्बई; डॉ. मीना जैन, उदयपुर; डॉ. अल्पना जैन, नोएडा ने विचार रखे।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता—ख्यातिप्राप्त विद्वान पण्डित मनीष जैन, मेरठ ने की। जिसमें क्षमा विषय पर श्री आलोक जैन, कारंजा; डॉ. नेमचन्द, खतौली; डॉ. कल्पना जैन, आगरा; डॉ. सुबोध मरोरा ने विषय प्रस्तुति दी।

पंचम सत्र की अध्यक्षता का कार्यभार—डॉ. अरविन्द जैन, जयपुर को सौंपा गया। जिसमें डॉ. सतीश जैन, अलीगढ़; मनोज जैन निर्लिप्त, अलीगढ़, श्री निखिल जैन, श्री अनुराज जैन, फिरोजाबाद; डॉ. सचिन्द्र जैन, मंगलायतन ने क्षमा धर्म पर अपना विषय प्रस्तुत किया।

अन्त में प्रो. अभयकुमार जैन, उपाध्यक्ष, जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ के द्वारा सभी विद्वानों, महानुभावों, पत्रकारों का आभार, प्रमाणपत्र व स्मृतिचिह्न देकर किया गया। इसी क्रम में तीर्थधाम मङ्गलायतन के निर्देशक पण्डित सुधीर शास्त्री द्वारा सभी का आभार व अहोभाव ग्रन्थ भेंट किया गया। पाँचों ही सत्रों का संचालन पण्डित अभिषेक शास्त्री व मङ्गलार्थी समकित शास्त्री द्वारा किया गया।

मांगलिक कार्यक्रम

बुधवार, 15-11-23

प्रातः	06.45 से 07.30	शोभायात्रा, झण्डारोहण
	07.30 से 09.00	जिनेन्द्र पूजन-प्रक्षाल, विधान (शान्ति-कुंथु-अरनाथ विधान)
	09.30 से 10.00	पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन
	10.00 से 10.45	स्वाध्याय
	10.50 से 11.30	स्वाध्याय
दोपहर	02.00 से 02.30	आध्यात्मिक पाठ
	02.30 से 04.00	मङ्गलार्थियों द्वारा विचार संगोष्ठी
रात्रि	06.00 से 06.45	भक्ति
	06.50 से 07.30	स्वाध्याय
	07.30 से 08.15	स्वाध्याय
	08.30 से 09.30	सांस्कृतिक कार्यक्रम - मङ्गलार्थियों द्वारा

गुरुवार, 16-11-23

प्रातः	07.00 से 08.00	जिनेन्द्र पूजन-प्रक्षाल
	08.00 से 08.30	पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन
	08.35 से 09.15	स्वाध्याय
	10.15 से 10.45	वेदी शिलान्यास सभा
	10.45 से 11.00	कलश यात्रा
	11.00 से 12.30	वेदी शिलान्यास समारोह

ध्वजारोहणकर्ता: श्री संजय दीवान परिवार, सूरत
विधान आयोजनकर्ता: श्रीमती रजनी जैन, धर्मपत्नी स्व. श्री मुकेश जैन, मेरठ
- पुत्र चिराग जैन परिवार, बैंगलोर

आलोकित ज्ञानदीप

प्रतिष्ठाचार्य बालब्रह्मचारी अभिनन्दकुमार जैन, खनियांधाना; बालब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़; पण्डित रजनीभाई दोशी, हिम्मतनगर; ज्योतिर्विद प्रकाशदादा, मैनपुरी; पण्डित विमलदादा झांझरी, उज्जैन; बालब्रह्मचारी सुमतप्रकाश जैन, विदिशा; पण्डित संजय शास्त्री, जेवर; पण्डित राजेन्द्रकुमार जैन, जबलपुर; पण्डित प्रदीप झांझरी, सूरत; डॉ. राकेश जैन, नागपुर; डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली; पण्डित जे.पी. दोशी, मुम्बई; पण्डित देवेन्द्र जैन, बिजौलियां; बालब्रह्मचारी सुकुमाल झांझरी, उज्जैन; पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर; पण्डित शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर; पण्डित राकेश जैन, लोनी, दिल्ली; डॉ. योगेश जैन, अलीगंज; पण्डित अजित शास्त्री, अलवर; डॉ. मनीष जैन, खतौली; पण्डित विराग शास्त्री, जबलपुर; पण्डित नगेश जैन, पिडावा; पण्डित अरहन्तप्रकाश झांझरी, उज्जैन; पण्डित संदीप जैन, दिल्ली; पण्डित ऋषभ शास्त्री, दिल्ली; पण्डित अलोक शास्त्री, कारंजा; पण्डित रमेश जैन, सनावद; पण्डित अमित अरहन्त; पण्डित अशोक लुहाड़िया; पण्डित सुधीर शास्त्री; डॉ. सचिन्द्र शास्त्री; पण्डित समकित शास्त्री; पण्डित अभिषेक शास्त्री, तीर्थधाम मङ्गलायतन

ट्रस्टी मण्डल

श्री अजितप्रसाद जैन, दिल्ली; श्री अजित जैन, बड़ोदरा; श्री जे. के. जैन, शामली; श्री मुकेश जैन, अलीगढ़; श्री स्वप्निल जैन, अलीगढ़; श्री अनिल जैन, बुलन्दशहर; श्रीमती बीना जैन, देहरादून; श्री आई. एस. जैन, मुम्बई; श्रीमती रजनी जैन, मेरठ

इस अवसर पर आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

Regn. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2021-23

मङ्गल आमंत्रण

सद्धर्मानुरागी बन्धुवर, सादर जयजिनेन्द्र एवं शुद्धात्म सत्कार!

आपको जानकर हर्ष होगा, वीर जिनेन्द्र के शासन में, कुन्दकुन्दादि दिगम्बर आचार्यों की अनुकम्पा से और पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग से तीर्थधाम मङ्गलायतन आप सभी के सहयोग से जिनशासन की आराधना-प्रभावना का महत् कार्य कर रहा है।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी शासन नायक भगवान श्री महावीरस्वामी के निर्वाण कल्याणक प्रसंग पर तीर्थधाम मङ्गलायतन के सुरम्य वातावरण में **आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं वेदी शिलान्यास चिदोत्सव** का आयोजन **शनिवार, 11 नवम्बर से मंगलवार, 14 नवम्बर 2023** एवं **बुधवार, 15 नवम्बर से गुरुवार, 16 नवम्बर 2023** तक किया जा रहा है।

इस शिक्षण शिविर के आयोजन में श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ़ और श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के साथ-साथ इस वर्ष **श्री शान्तिनाथ-अकम्पन-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हस्तिनापुर** द्वारा निर्माणाधीन **श्री शान्ति चिदेश जिनालय** का **वेदी शिलान्यास** का विशिष्ट कार्यक्रम भी आप सभी की गरिमामयी उपस्थिति में होने जा रहा है। इस शिक्षण शिविर की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इसमें पूजन विधान, पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन, विद्वानों का स्वाध्याय और गोष्ठियों का लाभ प्राप्त होगा।

ऐसे दुर्लभ अवसर पर लाभ प्राप्त करने हेतु आप सभी को हमारा भावभीना आमन्त्रण है। कृपया अवश्य पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ अर्जित कीजिए।

जैनं जयतु शासनम्।

पं. सं. : DELBIL/2001/4685

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक स्वप्निल जैन द्वारा **मङ्गलायतन** मुद्रणालय, आगरा रोड, अलीगढ़-202001 छपवाकर, 'विमलांचल', हरिनगर, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित। **सम्पादक :** डॉ. जयन्तीलाल जैन,मङ्गलायतन वि०वि०

If undelivered please return to -

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

Shri Adinath-Kundkund-Kahan Digamber Jain Trust

Harinagar, Agra Road, Aligarh-202001 (U.P.)

Ph. : 9997996346, 2410010/10; Fax : 2410019/22

info@mangalayatan.com www.mangalayatan.com